

बौद्ध धर्म में प्रव्रजित एवम् भिक्षुणी गणिकाएं

डॉ. संध्या शर्मा

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व अध्ययनशाला

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

प्राचीन भारतीय समाज में स्त्रियों का स्थान आदर्शात्मक तथा सम्मान जनक था। समाज के बदलते स्वरूप के साथ स्त्रियों की दशा में उतार चढ़ाव होते रहे, चूंकि भारत एक विशाल राष्ट्र है। देश के अलग अलग भागों में वहां की भौगोलिक परिस्थिति के अनुरूप, तो कभी अर्थव्यवस्था भी राजनीतिक स्थिति का मापदंड रही और यही कारण समाज के परिवर्तनशीलता के आधार बने। स्त्री मां, बहन, पुत्री तथा पत्नी के रूप में प्रतिष्ठित होती है परन्तु स्त्री की एक श्रेणी ऐसी भी है जो समाज निर्मित होते हुए भी गर्भित मानी गई है। प्राचीन काल में स्त्रियों की एक ऐसी श्रेणी थी। जो उच्च जाति की पत्नी की स्वतंत्रता को सीमित करने वाले नियमों से नहीं बंधी थी। वह गणिका रूपाजीवा अथवा वेश्या कहलाती थीं। निश्चित रूप से अनेक निर्धन तथा साधारण वेश्याएं होती थीं। जिनका जीवन भिक्षाटन अथवा निम्न स्तर का कार्य करने में व्यतीत होता था। परन्तु साहित्य में वर्णित वेश्याएं विशेष रूप से सुंदर, निपुण तथा धनी होती थीं प्रसिद्ध तथा सम्मान की पात्री होती थीं।¹ (बाशम 1967: 131)

जातक कथाओं में रूपदासी और वण्णदासी देशी, नारिरयेर, गामिनी, नगरशोभिनी, इत्थि और जनपद कल्याणी आदि शब्द गणिकाओं के लिए प्रयुक्त हुआ है। गणिका तत्कालीन समाज (गणराज्यों) की आवश्यकता मानी जाती थीं। वह नगर वधू कहलाती थी। उनका स्थान साधारण वेश्या से कहीं अधिक ऊंचा था, वह समाज में प्रतिष्ठा, सम्मान एवं प्रशंसा प्राप्त नारी होती थी, वह हेय दृष्टि से नहीं देखी जाती थीं। जातक कथाओं में वर्णित कहानियों के आधार पर बने चित्र हमें भरहुत, सांची और बोध गया की वेष्टनी, लेखिकाओं की दीवारों पर उत्कीर्ण मिलते हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास में युद्धकाल संक्रांति एवम् अद्भुत आप्लावन का युग माना जाता है।² (अवस्थी : 251) छठी शताब्दी में बौद्ध धर्म का अभ्युदय समाज सुधारक धर्म के रूप में हुआ था। बौद्ध धर्म में समाज में त्याज्य नारियों को भी संघ में प्रवेश दिया गया।

गणिका नगर की शोभा मानी जाती थी। वह प्रशंसित दृष्टि से देखी जाती थी। अत्यंत सुंदर, नयनाभिराम, गायन, वादन एवं नृत्य में पारंगत नारी को ही नगर वधू अथवा गणिका का पद प्रदान किया जाता था। महावंश में उल्लेख मिलता है कि गणिका का विधिपूर्वक अभिषेक किया जाता था।³ (महावग्ग : 8/1/3) बौद्ध कालीन प्रमुख गणिकाओं में वैशाली की आम्रपाली⁴ (महावग्ग जातक : 8/1/2) एवं समृद्ध राजगृह की सालवी तथा उज्जैन की पद्मावती थीं, जिन्हें प्रव्रज्या के पश्चात् अभयमाता के नाम से संबोधित किया गया। ये गणिकाएं राजकीय स्तर की गणिकाएं मानी जाती थीं। ये नगर वधूएं समृद्ध एवं संपन्न थीं तथा अनेक कलाओं में निष्णात होती थीं। नगर वधूएं राजपुरुषों एवं राजकुमारों के मध्य सम्मानित स्थान ग्रहण करने की अधिकारिणी थीं। गणिकाएं ललित कला में कुशल होती थीं। पालि भाषा के विनयपिटक में गणिका को मुहूत्तिया अर्थात् क्षण भर की संगिनी कहा है।⁵ (विनयपिटक : 3/138)

थेरीगाथा में विमला, सरमा, अंगकाशी, पद्मावती(अभयमाता) का उल्लेख प्राप्त होता है। इनके अलावा कई सारी गणिकाएं बौद्ध भिक्षुणी बनीं और समाज में अपनी विद्वता की मिसाल रखीं। जातक कथाओं में काली, सुलसा आदि सद्चरित्र, कार्यशील एवं स्वाभिमानी वेश्याओं का उल्लेख मिलता है। सरमा, विमला ने भी बौद्ध धर्म अपनाया। भिक्षुणी खेमा अपने समय की उच्च कोटि की विदुषी थी। परिवार के विकास होने के साथ ही नारी के ऊपर पुरुष का स्वत्वाधिकार की सामाजिक स्वीकृति के साथ ही गणिका वृत्ति की शुरुआत हुई। परिवार के बाहर के पुरुष को अर्थ या वस्तु के बदले अपना शरीर दान करने पर नारी को गणिका कहा गया गणिका का स्थान रूपाजीवा से उच्च था। गणिकाओं की शिक्षा दीक्षा का खर्च राज्य वहन करता था और उससे कर भी वसूल करता था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी वर्णित है। गणिका को प्रतिष्ठित दायित्व व अधिकार दोनों ही प्राप्त था। रुपदासी और वण्णदासी दूसरी प्रधान गायिकाओं के अधीन या स्वतंत्र रूप से प्रार्थी का मनोरंजन करती थीं। गणिका राष्ट्र से एक हजार पण मासिक वेतन प्राप्त करती थी। उसे चौंसठ कलाओं की शिक्षा देने के लिए राज्य अपनी ओर से शिक्षक नियुक्त करता था। बौद्ध साहित्य में उल्लिखित है कि गणिका सालवती की मां सिरिया अपनी बेटी का एक रात का मूल्य एक हजार कार्षापण लेती थी⁶ (धम्मपद टीका, 1906-14 : 308-9)। सामा जातक में काशी की गणिका सामा की पांच सौ अनुचरी होने का उल्लेख मिलता है।⁷ (सामा जातक : 3/59-63)।

आम्रपाली, वैशाली की प्रसिद्ध नगर वधू थी। वह गौतम बुद्ध, राजा बिंबिसार तथा अजातशत्रु की समकालीन थी। उसे वैशाली के गणराज्य में विशिष्ट स्थान प्राप्त था उसे “जनपद कल्याणी” की उपाधि दी गई थी। आम्रपाली के सौंदर्य का प्रभाव न केवल वैशाली में बल्कि अन्य राज्यों में भी था। राजगृह की सालवती भी अंबपाली के समान धनी प्रखर बुद्धि वाली थी तथा भारत के सभ्यभाग में प्रसिद्ध थी। वह अनेक कलाओं में दक्ष थी।⁸ (महावग्ग : 6/30/2) इनके बारे में उल्लेख मिलता है कि राजगृह नगर में सालवती नामक सुंदर नवयुवती थी, जो परम सुंदरी, रमणीया, दर्शनीयता थी, उसे ही गणिका पद के उपयुक्त पाकर उसका गणिकाभिषेक संपन्न किया गया।⁹ (महावग्ग : 8/1/3)

राजगृह के एक श्रेष्ठि ने वैशाली नगर का अवलोकन किया उसने वहां की समृद्ध नगरी के लोगों को संतुष्ट पाया। राजगृह वापस लौटने पर उसने मगधराज श्रेणिय बिंबिसार से निवेदन किया कि वैशाली में अंबपाली नाम की गणिका का वास है, जो परम सुंदरी, सुंदर शर्मा, गायन-नृत्य विशारदा तथा अभिलाशीजन बहुदर्शनीया है। महाराज प्रसन्न हों, हम भी एक गणिका का अभिषेक करें। तत्पश्चात् सालवी को गणिका पद हेतु उपयुक्त मानकर उसे अभिषिक्त किया गया।¹⁰ (महावग्ग : 8/1/3)। सालवती का पुत्र जीवक राजवैद्य बना, इससे यह ज्ञात होता है, कि गणिका की संतान को उस युग में हेय दृष्टि से नहीं देखा जाता था। पद्मावती उज्जैन की प्रसिद्ध रुपवती गणिका थी वह राजगृह में ही बिंबिसार की उपपत्नी बनकर रह गई¹¹ (त्रिपाठी 1960, उद्धृत) विमला वैशाली के एक वेश्या की पुत्री थी इसने भी अपने वंशानुगत पेशे को अपनाया था। उसे अपने रूप यौवन पर बहुत अभिमान था। महामौद्गल्यायन वैशाली की गलियों में भिक्षाटन करने निकले उसे देखकर विमला उनके शांत सौम्य आकृति पर मुग्ध होकर उन्हें अपने रूप सौंदर्य से मोहित करने का प्रयास करने लगी। थेरीगाथा में उल्लेख मिलता है कि महामौद्गल्यायन ने उन्हें समय आने पर उपदेश दिया जिससे वह सांसारिक माया मोह छोड़ कर भिक्षुणी हो गई। विमला और सरमा दोनों ने वेश्यावृत्ति छोड़कर बौद्ध धर्म को अपनाया। अंबपाली बुद्ध के प्रभाव से उनकी शिष्या हुई और बौद्ध संघ को अनेक दान दिया। गौतम बुद्ध ने आम्र पाली का दान स्वीकार कर उसे बौद्ध धर्म में दीक्षित किया। अपने शिष्यों सहित उसका भोजन ग्रहण किया। अंबपाली गणिका की दक्षिणा को लेकर

राजगृह व वैशाली के मध्य कलह की स्थिति निर्मित हो गई थी। अंबपाली बुद्ध और उसके एक हजार शिष्यों को भोजन के लिए आमंत्रित करती है। इनकी दानराशि को देखकर इनकी संपन्नता का अनुमान लगाया जा सकता है। काली नामक गणिका आत्मसम्मानि तथा सामाजिक मान्यताओं का निर्वाह करती थी। उसने अपने दुश्चरित्र तुण्डिल नामक भाई को, जो कि शराबी और जुआरी था, उसका सामाजिक बहिष्कार होने पर उसे अपने घर से निकाल दिया¹² (जातक : 4 / 248–49.) पद्मावती को प्रवज्या लेने के पश्चात अभयमाता के नाम से संबोधित किया गया इनके पुत्र भी बौद्धधर्म ग्रहण किया और भिक्षु हो गए। थेरीगाथा में इनका उल्लेख मिलता है। सुलसा जातक में सुलसा के बौद्ध धर्म ग्रहण करने का उल्लेख मिलता है।¹³ (सुलसा जातक : 419)

भगवान बुद्ध श्रमण संस्कृति के आराधक तपस्वी थे। उन्होंने स्त्रियों को बड़ी संख्या में प्रवर्जित कर बौद्ध संघ में प्रवेश करने की अनुमति प्रदान की बौद्ध धर्म में दीक्षित होकर अनेक गणिकाओं ने नया जीवन दर्शन प्राप्त किया। बुद्ध ने नारियों के लिए मोक्ष का मार्ग प्रशस्त किया। बौद्ध धर्म और बौद्ध साहित्य के आधार पर निश्चित तौर से कहा जा सकता है, कि महात्मा बुद्ध ने धार्मिक सुधार के साथ सामाजिक सुधार करके समाज को नये सामाजिक आयाम प्रदान किये।

संदर्भ –

1. बाशम, ए. एल., 1967, अद्भुत भारत (अनुवादित ग्रंथ) नई दिल्ली, प्रकाशक शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी।
2. अवस्थी, डॉ. शशि, 1981, प्राचीन भारतीय समाज, पटना, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
3. महावग्ग
4. विनयपिटक
5. धम्मपद टीका, 1906–14, लंदन, पालि टेक्स्ट सोसाईट
6. सामा जातक
7. त्रिपाठी, हवलदार, 1960, बौद्ध धर्म और विहार, पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्
8. सुलसा जातक